



भारतीय ज्ञान परम्परा के संवर्धन एवं संरक्षण में नारी शक्ति का युगीन अवदान

The Epochal Contribution of Women Power in the Promotion and Preservation of Indian Knowledge Tradition.

शोधार्थी

शोध निर्देशिका

अनूप कुमार (सप्तम बैच)

प्रो.काव्या दुबे

शिक्षाशास्त्र विभाग बु.वि.झाँसी

शिक्षाशास्त्र विभाग बु.वि.झाँसी

1.सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास, संरक्षण एवं संवर्धन में नारी शक्ति के युगानुरूप योगदान का वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। भारतीय सभ्यता में ज्ञान को केवल बौद्धिक संपदा न मानकर जीवन-दर्शन का आधार माना गया है, जिसमें नारी की भूमिका सदैव केंद्रीय रही है। वैदिक काल की ऋषिकाओं से लेकर आधुनिक युग की शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, समाज सुधारकों एवं नीति-निर्माताओं तक, नारी ने ज्ञान की परम्परा को जीवंत बनाए रखा। इस शोध में ऐतिहासिक स्रोतों, साहित्यिक ग्रंथों, दार्शनिक विमर्शों तथा आधुनिक शैक्षिक नीतियों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा नारी सहभागिता के बिना अधूरी है। अध्ययन यह भी संकेत देता है कि समकालीन शिक्षा व्यवस्था में IKS के पुनरुत्थान हेतु नारी योगदान को पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक नीतियों में समुचित स्थान दिया जाना आवश्यक है।

मुख्य शब्द : भारतीय ज्ञान परम्परा, नारी शक्ति, शिक्षा, आईकेएस, सांस्कृतिक संरक्षण

2.प्रस्तावना :-

भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की सबसे प्राचीन, सतत और समृद्ध ज्ञान परम्पराओं में से एक है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें ज्ञान को केवल सूचना या कौशल तक सीमित न मानकर आत्मिक, नैतिक एवं सामाजिक विकास का माध्यम स्वीकार किया गया है। भारतीय दर्शन में ज्ञान को 'सत्यं-शिवं-सुंदरम्' की त्रिवेणी से जोड़ा गया है, जहाँ नारी को 'शक्ति' और 'सरस्वती' के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। यह तथ्य स्वयं इस बात का प्रमाण है कि भारतीय संस्कृति में नारी को ज्ञान की अधिष्ठात्री माना गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो भारतीय समाज में नारी ने केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित भूमिका नहीं निभाई, बल्कि शिक्षा, दर्शन, साहित्य, विज्ञान और सामाजिक सुधार के क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। वैदिक युग की ऋषिकाएँ, उपनिषद काल की विदुषियाँ, मध्यकालीन भक्ति आंदोलन की संत कवयित्रियाँ तथा आधुनिक युग की शिक्षाविद एवं वैज्ञानिक—सभी ने भारतीय ज्ञान परम्परा को समृद्ध किया है। वर्तमान शोध पत्र का उद्देश्य इसी ऐतिहासिक निरंतरता को रेखांकित करना है और यह स्पष्ट करना है कि नारी शक्ति भारतीय ज्ञान परम्परा की संरक्षक और संवर्धक दोनों रही है। भारतीय संस्कृति और ज्ञान परम्परा के विशाल फलक पर नारी की भूमिका मात्र एक सहभागी की नहीं, बल्कि एक आधारशिला के रूप में प्रतिष्ठित रही है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः' का उद्धोष करने वाली यह मेधा नारी को केवल गृहस्थी तक सीमित नहीं मानती, बल्कि उसे 'शक्ति', 'मातृत्व' और 'ज्ञान' के त्रिवेणी संगम के रूप में देखती है। भारतीय मनीषा में सृष्टि के उद्भव से लेकर उसके पोषण तक नारी को बौद्धिक चेतना का केंद्र माना गया है। प्राचीन वैदिक काल में जहाँ गागी, मैत्रेयी और लोपामुद्रा जैसी ऋषिकाओं ने अपनी दार्शनिक प्रखरता से ब्रह्मविद्या के रहस्यों को सुलझाया, वहीं मध्यकाल के संक्रमण काल में मीराबाई, अक्का महादेवी और लल्लेश्वरी जैसी भक्त-कवयित्रियों ने आध्यात्मिक चेतना को जन-जन तक पहुँचाया। यद्यपि उत्तर-वैदिक और स्मृति काल में सामाजिक व राजनैतिक परिस्थितियों के कारण नारी की

भूमिका में संकुचन देखा गया, किंतु आधुनिक काल के पुनर्जागरण ने सावित्रीबाई फुले और पंडिता रमाबाई जैसे व्यक्तित्वों के माध्यम से स्त्री-शिक्षा और अधिकारों की पुनः स्थापना की। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य इसी ऐतिहासिक और सामाजिक यात्रा का विश्लेषण करना है, जो सिद्ध करता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रवाह नारी शक्ति के योगदान के बिना अधूरा है।

3.अध्ययन के उद्देश्य :-

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में नारी शक्ति के योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन करना।
2. वैदिक, मध्यकालीन एवं आधुनिक काल में नारी के दार्शनिक, शैक्षिक एवं सामाजिक अवदान का विश्लेषण करना।
3. समकालीन परिप्रेक्ष्य में नारी शक्ति की भूमिका को भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के संदर्भ में समझना।
4. शिक्षा के क्षेत्र में नारी योगदान के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत करना ।

4.संबंधित साहित्य की समीक्षा :-

भारतीय ज्ञान परंपरा में नारी की भूमिका प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण रही है। पण्डिता रमाबाई (1887) और भगिनी निवेदिता (1904) ने नारी शिक्षा एवं सामाजिक चेतना पर बल दिया। आनंद कुमारस्वामी (1918) ने नारी को 'शक्ति' का प्रतीक मानते हुए कला व अध्यात्म में उसके सृजनात्मक योगदान को रेखांकित किया।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में पी.वी. काणे (1930–1962) तथा डॉ. ए.एस. अल्तेकर (1938) ने प्रमाणित किया कि वैदिक काल में महिलाओं को वेदाध्ययन और बौद्धिक गतिविधियों का अधिकार प्राप्त था। इसी क्रम में डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी (1947) ने प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में सह-शिक्षा और महिलाओं की विद्वत्ता का उल्लेख किया, जबकि मैक्स मूलर ने ऋग्वेद में ऋषिकाओं के योगदान को स्वीकार किया।

आधुनिक संदर्भ में महादेवी वर्मा (1942) ने नारी की बौद्धिक स्वतंत्रता का समर्थन किया। डॉ. कपिल कपूर (2005), स्वामिनी प्रज्ञानानंद (2010) तथा डॉ. किरण बेदी (2010) ने नारी की बौद्धिक, प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक क्षमता को समकालीन परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया।

संस्थागत स्तर पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद तथा यूनिस्को (2021) ने भी नारी शक्ति के ऐतिहासिक एवं पारंपरिक ज्ञान संरक्षण में योगदान को स्वीकार किया। नवीन शोधों में डॉ. शीला मिश्रा (2024) ने भारतीय ज्ञान परंपरा और नारी शक्ति के अंतर्संबंधों को शिक्षा नीति से जोड़ा है।

5.शोध पद्धति :-

प्रस्तुत शोध एक वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का अध्ययन है। इसमें ऐतिहासिक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए प्राथमिक स्रोतों के रूप में वेद, उपनिषद, स्मृतियाँ एवं प्राचीन ग्रंथों का उपयोग किया गया है, जबकि द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत शोध पत्रिकाएँ, पुस्तकें, जीवनी साहित्य तथा सरकारी दस्तावेजों (जैसे एन.इ.पी. २०२०, एन.सी.एफ. २०२३) का अध्ययन किया गया है। साथ ही सामग्री विश्लेषण तकनीक के माध्यम से उपलब्ध साहित्य की व्याख्या एवं विश्लेषण किया गया है।

6. प्राचीन काल में नारी शक्ति का ज्ञानात्मक अवदान

6.1 वैदिक काल की ऋषिकाएँ: मंत्र-द्रष्टा एवं दार्शनिक नेतृत्व

वैदिक काल में नारी की स्थिति अत्यंत सम्मानजनक और गरिमामयी थी। यह वह स्वर्ण युग था जहाँ नारी केवल शिक्षा प्राप्त करने वाली 'सहभागी' नहीं, बल्कि ज्ञान की 'सृजक' भी थी। ऋग्वेद में लगभग 27 ऋषिकाओं का उल्लेख मिलता है, जिन्हें 'मंत्र-द्रष्टा' (ज्ञान का साक्षात्कार करने वाली) कहा गया है। 'बृहद् देवता' ग्रंथ के द्वितीय अध्याय में इन ऋषिकाओं की प्रामाणिक सूची प्राप्त होती है, जिनमें लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, विश्ववारा, गोधा और गार्गी प्रमुख हैं। इन ऋषिकाओं ने न केवल आध्यात्मिक ज्ञान को समाज तक पहुँचाया, बल्कि ऋग्वेद की ऋचाओं का साक्षात्कार भी किया। लोपामुद्रा के सूक्तों में दांपत्य जीवन एवं आध्यात्मिक संतुलन की गहन व्याख्या मिलती है, जबकि घोषा ने नारी जीवन की वेदना और आशा को दार्शनिक रूप प्रदान किया। नारी के इस प्रशासनिक और सामाजिक अधिकार की पुष्टि अथर्ववेद के इस मंत्र से भी होती है 'एवा त्वम् साम्राज्येधि पत्यरस्तं परेत्य' (अथर्ववेद 14/०१/४३) इसका अर्थ है कि विवाह के उपरान्त स्त्री को न केवल ससुराल की, बल्कि सम्राज्ञी की भाँति पूरे परिवेश पर शासन करने और निर्णय लेने का अधिकार था। डॉ. शीला मिश्रा के अनुसार, वैदिक काल में राजा की पत्नी (महिषी) का प्रशासनिक कार्यों में महत्वपूर्ण स्थान था। वेदों ने स्त्रियों पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं लगाया और उन्हें 'चिर विजयिनी' की उपाधि दी।

इस काल में 'ब्रह्मवादिनी' स्त्रियाँ (जैसे वयुना और धारिणी) वेद और ब्रह्म का उपदेश देकर समाज का मार्गदर्शन करती थीं। यह सिद्ध करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा की नींव में नारी की तार्किकता, प्रशासनिक कुशलता और आध्यात्मिक प्रखरता का अतुलनीय योगदान रहा है।

6.2 उपनिषद काल की विदुषियाँ

उपनिषद काल में नारी दार्शनिक विमर्श की सक्रिय सहभागी थी। बृहदारण्यक उपनिषद में गार्गी और याज्ञवल्क्य का संवाद भारतीय तर्क परम्परा का श्रेष्ठ उदाहरण है। गार्गी द्वारा 'अक्षर ब्रह्म' पर पूछे गए प्रश्न उनकी गहन बौद्धिक क्षमता को दर्शाते हैं। वहीं मैत्रेयी ने भौतिक संपदा के स्थान पर आत्मज्ञान को वरीयता देकर भारतीय जीवन-दर्शन को नई दिशा दी।

7. मध्यकालीन भक्ति आंदोलन में नारी का योगदान: आध्यात्मिक क्रांति और सामाजिक संवर्धन

मध्यकाल भारतीय इतिहास का वह संक्रमण काल था जब समाज राजनैतिक अस्थिरता, बाह्य आक्रमणों और जटिल सामाजिक रूढ़ियों से जूझ रहा था। इस कठिन समय में 'भक्ति आंदोलन' ने न केवल जनमानस को सांस्कृतिक संबल प्रदान किया, बल्कि नारी शक्ति को अपनी अभिव्यक्ति का एक नया और सशक्त धरातल भी दिया। यद्यपि उत्तर-वैदिक और स्मृति काल में सामाजिक संकुचन के कारण स्त्रियों की औपचारिक शिक्षा के अवसर कम हुए थे, किंतु भक्ति आंदोलन ने ज्ञान और भक्ति के द्वार पुनः महिलाओं के लिए खोल दिए। डॉ. शीला मिश्रा के विश्लेषणानुसार, भक्ति साहित्य इस काल में नारी की 'स्वतंत्र चेतना' का माध्यम बना, जिसने तत्कालीन पितृसत्तात्मक सीमाओं को चुनौती देते हुए नारी को पुनः समाज के आध्यात्मिक केंद्र में स्थापित किया।

इस युग की प्रमुख महिला संतों का योगदान निम्नलिखित है:

मीराबाई (उत्तर भारत): मीराबाई ने भक्ति को मात्र उपासना नहीं, बल्कि 'आत्मिक स्वतंत्रता' का माध्यम बनाया। उन्होंने तत्कालीन सामंती बंधनों और सामाजिक मर्यादाओं को चुनौती देते हुए 'आत्म-बोध' के ज्ञान को सर्वोपरि रखा। उनके पद आज भी भारतीय मूल्य व्यवस्था के संरक्षण में बड़ी भूमिका निभाते हैं। **आंडाल (दक्षिण भारत):** इन्हें 'दक्षिण की मीरा' कहा जाता है। आंडाल ने तमिल लोकभाषा के माध्यम से वैष्णव भक्ति (तिरुप्पावै) को जन-जन तक पहुँचाया। उन्होंने सिद्ध किया कि शास्त्रीय ज्ञान केवल संस्कृत तक सीमित नहीं है, बल्कि वह लोकभाषा में भी उतना ही प्रभावी है। **लल्लेश्वरी/ललदद (कश्मीर):** कश्मीरी शैव दर्शन की महान प्रतिपादक लल्लेश्वरी ने 'लल-वाख' के माध्यम से गूढ़ दार्शनिक ज्ञान को अत्यंत सरल और सुबोध बनाया। उन्होंने बाहरी आडंबरों का विरोध कर अंतर्मन के ज्ञान पर बल दिया।

अक्का महादेवी (कर्नाटक): वीरशैव आंदोलन की प्रमुख स्तंभ अक्का महादेवी ने अपने 'वचन' साहित्य के माध्यम से वैराग्य और दर्शन की नई व्याख्या प्रस्तुत की, जो आज भी भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न अंग है।

निष्कर्षतः मध्यकालीन नारी संतों ने 'भाव' और 'भक्ति' के माध्यम से शास्त्र के कठिन ज्ञान को सरल बनाकर जनभाषा में प्रवाहित किया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि नारी केवल परिवार की संरक्षिका ही नहीं, बल्कि ज्ञान और आध्यात्मिकता की सशक्त संवाहक भी है।

8. आधुनिक काल में नारी शक्ति और ज्ञान परम्परा :-

आधुनिक युग में प्राचीन भारतीय गौरव की पुनर्स्थापना का श्रेय १९वीं और २०वीं सदी के समाज सुधारकों को जाता है। इस काल में नारी शक्ति ने शिक्षा को न केवल व्यक्तिगत विकास, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रमुख साधन बनाया।

8.1 शिक्षा और समाज सुधार: नेतृत्वकारी भूमिका

सावित्रीबाई फुले: आधुनिक भारत में स्त्री शिक्षा की वास्तविक क्रांति सावित्रीबाई फुले के नेतृत्व में हुई। उन्होंने १८४८ में बालिकाओं के लिए प्रथम विद्यालय खोलकर उस समय की रूढ़ियों को चुनौती दी। उनका योगदान भारतीय ज्ञान परम्परा को पुनः प्रत्येक वर्ग की महिला तक पहुँचाने का आधार बना। **पंडिता रमाबाई:** उन्होंने महिला शिक्षा और सामाजिक सुधार के लिए अपना जीवन समर्पित किया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि नारी शास्त्रीय ज्ञान और आधुनिक शिक्षा दोनों में समान रूप से निपुण हो सकती है। **सरोजिनी नायडू एवं राजनैतिक नेतृत्व:** सरोजिनी नायडू जैसे नेतृत्व ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय नारी राजनैतिक और सामाजिक नवाचार में सदैव अग्रणी रही है। उन्होंने सिद्ध किया कि स्वाधीनता संग्राम में नारी की भूमिका केवल सहायक की नहीं, बल्कि पथ-प्रदर्शक की थी।

8.2 साहित्य, विज्ञान और दर्शन: बौद्धिक एवं वैश्विक नेतृत्व :-

आधुनिक भारत में नारी शक्ति ने केवल सामाजिक क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि ज्ञान के अत्यंत गूढ़ क्षेत्रों—साहित्य, विज्ञान और दर्शन—में भी अपनी मेधा का लोहा मनवाया है। यह प्राचीन 'ब्रह्मवादिनी' परंपरा का ही आधुनिक विस्तार है। **साहित्य और चेतना:** आधुनिक हिंदी साहित्य में **महादेवी वर्मा** ने नारी की अंतर्वेदना और दार्शनिकता को जो स्वर दिया, उसने उन्हें 'आधुनिक मीरा' के रूप में स्थापित किया। वहीं, **सुभद्रा कुमारी चौहान** की कविताओं ने राष्ट्रवाद और नारी शौर्य की नई परिभाषा गढ़ी। इन साहित्यकारों ने भारतीय समाज की सुप्त चेतना को जागृत करने और नारी के 'स्व' को पहचानने में महती भूमिका निभाई। **विज्ञान और अनुसंधान:** विज्ञान के जटिल क्षेत्रों में भारतीय महिलाओं का योगदान वैश्विक स्तर पर अनुकरणीय रहा है। जानकी अम्माल (वनस्पति विज्ञान) और असीमा चटर्जी (रसायन शास्त्र) ने उस दौर में शोध की नींव रखी जब महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसर सीमित थे। वर्तमान में **डॉ. सौम्या स्वामीनाथन** जैसी वैज्ञानिकों ने चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व प्रदान कर भारत का नाम रोशन किया है। यह सिद्ध करता है कि भारतीय नारी की 'तर्कशक्ति' और 'मेधा' वैदिक काल से लेकर आज के अंतरिक्ष युग तक अटूट है। दर्शन और समन्वय: दर्शन के क्षेत्र में भारतीय महिलाओं ने सदैव संतुलन और समन्वय का संदेश दिया है। **डॉ. शीला मिश्रा के विचारानुसार**, यह बौद्धिक प्रखरता दरअसल उसी 'शक्ति' का स्वरूप है जिसका वर्णन वेदों में मिलता है। आज की महिला वैज्ञानिक और साहित्यकार अपनी ज्ञान परंपरा को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर 'विश्वगुरु भारत' के संकल्प को सिद्ध कर रही हैं।

9. समकालीन परिप्रेक्ष्य में नारी शक्ति: प्राचीन मूल्यों का आधुनिक विस्तार :-

समकालीन भारत में नारी शक्ति केवल अधिकारों की चर्चा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह विज्ञान, खेल, प्रशासन और डिजिटल नवाचार के क्षेत्रों में वैश्विक नेतृत्व कर रही है। यह आधुनिक प्रगति दरअसल हमारी उसी प्राचीन ज्ञान परम्परा का परिणाम है जो नारी को 'शक्ति' और 'मेधा' का पुंज मानती है।

9.1 प्रमुख क्षेत्रों में नेतृत्वकारी भूमिका :-

अंतरिक्ष और विज्ञान: कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स जैसी विभूतियों ने अंतरिक्ष विज्ञान के कठिनतम क्षेत्रों में भारतीय मेधा का परचम लहराया। यह उनकी उसी वैज्ञानिक चेतना का विस्तार है जो वैदिक काल की ऋषिकाओं में सत्य की खोज के रूप में विद्यमान थी। **खेल जगत और शारीरिक सामर्थ्य:** पी.टी. उषा और मैरी कॉम ने सिद्ध किया कि भारतीय नारी शारीरिक और मानसिक रूप से अपराजित है। उनके संघर्ष और सफलता की कहानी भारतीय मूल्यों—अनुशासन और अडिग संकल्प—को साकार करती है। प्रशासनिक सेवाएँ: आज भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी यह दर्शाती है कि समाज के संचालन और नीति-निर्धारण में नारी की भूमिका पुनः मुख्यधारा में लौट रही है।

9.2 भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल्यों का समावेशन :-

डॉ. शीला मिश्रा के विश्लेषणानुसार, समकालीन समय में नारी की यह सफलता केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह भारतीय ज्ञान परम्परा के तीन मूल स्तंभों को प्रतिबिंबित करती है:

अनुशासन:- जो लक्ष्य प्राप्ति का आधार है। समर्पण : जो कार्य को सेवा भाव से जोड़ता है। सेवा : जो व्यक्तिगत उन्नति को सामाजिक कल्याण की ओर ले जाता है।

निष्कर्षतः डिजिटल नवाचार और तकनीक के इस युग में भारतीय नारी अपनी पारंपरिक जड़ों से जुड़कर 'लोकल' को 'ग्लोबल' बना रही है। समकालीन परिप्रेक्ष्य में नारी शक्ति उसी 'आदि शक्ति' का आधुनिक अवतार है, जो ज्ञान और कर्म के समन्वय से राष्ट्र निर्माण में संलग्न है।

10. शैक्षिक निहितार्थ :-

भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु आवश्यक है कि नारी योगदान को विद्यालय एवं उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों में समुचित स्थान दिया जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा २०२३ में आईकेएस को विशेष महत्व दिया गया है, जिसके अंतर्गत नारी विदुषियों के योगदान को शामिल किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में लैंगिक समानता, सांस्कृतिक चेतना एवं राष्ट्रीय मूल्यों का विकास होगा।

11. वर्तमान प्रासंगिकता: "आज की नई शिक्षा नीति (एनईपी २०२०) के संदर्भ में, भारतीय ज्ञान परंपरा (आईकेएस) को तभी पूर्ण माना जा सकता है जब हम नारी शक्ति को 'समावेशी शिक्षा' का आधार स्तंभ मानकर उनके योगदान का समुचित मूल्यांकन करें।"

12. निष्कर्ष :-

प्रस्तुत अध्ययन के सूक्ष्म विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा नारी शक्ति के योगदान के बिना अपूर्ण है। वैदिक ऋषिकाओं की मंत्र-दृष्टि से लेकर आधुनिक वैज्ञानिकों की मेधा तक, नारी ने ज्ञान के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार में सदैव एक अपरिहार्य और सतत भूमिका निभाई है। ज्ञान की संवाहिका: प्राचीन काल से ही नारी केवल ज्ञान की उपभोक्ता नहीं, बल्कि उसकी रचयिता रही है। मध्यकाल की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उन्होंने 'भक्ति' को ज्ञान के मार्ग के रूप में जीवित रखकर भारतीय संस्कृति की रक्षा की। शैक्षिक विमर्श का केंद्र: वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में यदि हम ज्ञान परम्परा का वास्तविक पुनरुत्थान करना चाहते हैं, तो नारी के योगदान को मात्र ऐतिहासिक तथ्य (Historical Fact) न मानकर उसे शैक्षिक विमर्श (Educational Discourse) का केंद्र बनाना अनिवार्य होगा। अस्मिता और नवाचार: डॉ. शीला मिश्रा के वैचारिक दृष्टिकोण के अनुरूप, आधुनिक नारी अपनी जड़ों से जुड़कर ही वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रही है। भारतीय नारी की यह प्रगति केवल पश्चिमी अनुकरण नहीं, बल्कि अपनी प्राचीन मेधा का आधुनिक विस्तार है। यही एकीकृत दृष्टिकोण एक ऐसे समावेशी, सशक्त एवं सांस्कृतिक रूप से जागरूक भारत के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा, जो अपनी प्राचीन विरासत पर गर्व करते हुए आधुनिक विज्ञान के शिखर को छूने का सामर्थ्य रखता है।

13. भावी विमर्श एवं अनुसंधान हेतु प्रस्तावित सुझाव :-

शैक्षणिक पाठ्यचर्या का पुनर्गठन: यह नितांत आवश्यक है कि प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षण संस्थानों तक की पाठ्यपुस्तकों में 'भारतीय ज्ञान परंपरा' को समाहित किया जाए। इसमें विशेष रूप से विस्मृत कर दी गई वैदिक ऋषिकाओं के दार्शनिक चिंतन और ऐतिहासिक महिला नायिकाओं के नेतृत्व कौशल को प्रमुखता से स्थान दिया जाना चाहिए, ताकि युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ सके। प्रमाणीकरण हेतु सांख्यिकीय तंत्र का विकास: डॉ. शीला मिश्रा के वैचारिक दृष्टिकोण का अनुसरण करते हुए यह सुझाव दिया जाता है कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की वास्तविक स्थिति के आकलन हेतु एक सुदृढ़ 'सांख्यिकीय डेटाबेस' विकसित किया जाए। नियमित अंतराल पर डेटा का वैज्ञानिक विश्लेषण करने से ही नारी शक्ति की प्रगति का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन संभव हो सकेगा। देशज ज्ञान का दस्तावेजीकरण: भारत के ग्रामीण अंचलों में निवासरत महिलाओं के पास पारंपरिक आयुर्वेद, हस्तशिल्प और लोक-कलाओं का जो अनूठा ज्ञान है, उसे अकादमिक शोध के दायरे में लाया जाना चाहिए। 'लोकल' ज्ञान को 'ग्लोबल' पहचान दिलाने हेतु इसे बौद्धिक संपदा अधिकारों (IPR) से जोड़ना समय की मांग है। ज्ञान का डिजिटलीकरण एवं पुरालेख संरक्षण: प्राचीन संस्कृत ग्रंथों और दुर्लभ पांडुलिपियों में वर्णित नारी के ज्ञानात्मक अवदान को संरक्षित करने हेतु एक व्यापक 'डिजिटल आर्काइव' निर्मित किया जाना चाहिए। यह भविष्य के शोधार्थियों के लिए प्राथमिक स्रोत के रूप में उपलब्ध होगा और दुर्लभ मेधा

के लुप्त होने के खतरे को कम करेगा। सांस्कृतिक चेतना एवं विमर्श का आयोजन: महिलाओं के सशक्तिकरण को केवल पश्चिमी दृष्टिकोण से देखने के बजाय, भारतीय 'शक्ति' के मूल स्वरूप के संदर्भ में पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है। इसके लिए विश्वविद्यालयों में नियमित अंतराल पर ऐसी संगोष्ठियों और कार्यशालाओं का आयोजन हो जो भारतीय मूल्यों पर आधारित मौलिक सशक्तिकरण की चेतना जाग्रत करें।

संदर्भ सूची :-

- अल्तेकर, ए. एस. (1938). *द पोजीशन ऑफ़ वीमेन इन हिंदू सिविलाइजेशन*। बनारस: कल्चरल पब्लिकेशन हाउस।
- अल्तेकर, ए. एस. (1956). *द पोजीशन ऑफ़ वीमेन इन हिंदू सिविलाइजेशन*। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
- काणे, पी. वी. (1941). *हिस्ट्री ऑफ़ धर्मशास्त्र (खंड 2)*। पुणे: भांडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट।
- काणे, पी. वी. (1962). *हिस्ट्री ऑफ़ धर्मशास्त्र (खंड 2, भाग 1)*। पुणे: भांडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट।
- शास्त्री, शकुंतला राव (1952). *विमेन इन द वैदिक एज*। मुंबई: भारतीय विद्या भवन।
- बाशम, ए. एल. (1954). *द वंडर दैट वॉज़ इंडिया*। लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन।
- उपाध्याय, भगवतशरण (1990). *भारतीय संस्कृति के स्रोत*। दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- शुक्ल, रामचंद्र (2005). *हिंदी साहित्य का इतिहास*। वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
- सांकृत्यायन, राहुल (1954). *मध्य एशिया का इतिहास*। पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद।
- थारू, एस. एवं ललिता, के. (1991). *विमेन राइटिंग इन इंडिया: 600 ई. पू. से बीसवीं सदी के प्रारंभ तक*। न्यूयॉर्क: फेमिनिस्ट प्रेस।
- भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*। नई दिल्ली।
- धर्मपाल (1983). *द ब्यूटीफुल ट्री: अठारहवीं शताब्दी में स्वदेशी भारतीय शिक्षा*। नई दिल्ली: बिब्लियो इम्पेक्स।
- सेनगुप्ता, पी. (1970). *पंडिता रमाबाई सरस्वती: जीवन और कार्य*। कोलकाता।
- सुब्रमण्यम, सी. वी. (2007). *जानकी अम्माल: जीवन और विज्ञान*। बेंगलुरु: इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज़।
- किश्वर, मधु (1989). *द विमेन भक्त पोएट्स*। नई दिल्ली: मानुषी ट्रस्ट।
- वर्मा, महादेवी (1942). *श्रृंखला की कड़ियाँ*। प्रयाग: भारती भंडार।
- एनसीईआरटी (2023). *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन*। नई दिल्ली।
- शिक्षा मंत्रालय (2022). *भारतीय ज्ञान प्रणाली का परिचय*। नई दिल्ली: आईकेएस प्रभाग, भारत सरकार।
- देसाई, नीरा (1957). *विमेन इन मॉडर्न इंडिया*। मुंबई: वोरा एंड कंपनी।
- रे, भारती (2005). *विमेन ऑफ़ इंडिया: औपनिवेशिक एवं उत्तर-औपनिवेशिक काल*। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशंस।
- मूर्ति, सुधा (2017). *श्री थाउजेंड स्टिचेज: ऑर्डिनरी पीपल, एक्स्ट्राऑर्डिनरी लाइव्स*। नई दिल्ली: पेंगुइन।
- इसरो (2014–2023). *अंतरिक्ष अभियानों में महिला वैज्ञानिकों पर प्रतिवेदन*। भारत सरकार।
- कुमार, आर. (2025). *भारतीय ज्ञान परम्परा में नारी की भूमिका: ऐतिहासिक एवं सामाजिक अध्ययन*। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेड्स इन इमर्जिंग रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 3(5), 15–18।
- वेदव्यास (2015). *श्रीमद्भागवत महापुराण*। गोरखपुर: गीता प्रेस।
- शर्मा, आचार्य श्रीराम (1994). *वेदों का दिव्य संदेश*। मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान।
- शर्मा, आचार्य श्रीराम (सम्पा.) (2001). *108 उपनिषद् (खंड 1–3)*। मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान।
- तुलसीदास, गोस्वामी (2004). *श्रीरामचरितमानस*। गोरखपुर: गीता प्रेस।

- अरविन्द, महर्षि (1956). *ऑन एजुकेशन*/पांडिचेरी: श्री अरविन्द आश्रम प्रकाशन।
- विवेकानंद, स्वामी (1997). *कोलंबो से अल्मोड़ा तक के व्याख्यान*/कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
- मिश्रा, शीला (2024). *भारतीय ज्ञान परम्परा एवं नारी शक्ति*/लखनऊ विश्वविद्यालय।
- बृहद् देवता (शौनक कृत). (अध्याय 2). ऋषिकाओं का वर्णन।
- ऋग्वेद (मंडल 10). घोषा, अपाला एवं लोपामुद्रा के सूक्त।
- बेदी, किरण (2010). *एम्पावरिंग विमेन: द इंडियन पर्सपेक्टिव*/नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स।
- कपूर, कपिल (2005). *इंडियन नॉलेज सिस्टम्स*/नई दिल्ली: डी.के. प्रिंटवर्ल्ड।
- मूकरजी, आर. के. (1947). *एंशिएंट इंडियन एजुकेशन (ब्राह्मणिकल एंड बौद्धिस्ट)*/लंदन: मैकमिलन एंड कंपनी।
- निवेदिता, सिस्टर (1904). *द वेब ऑफ इंडियन लाइफ*/लंदन: विलियम हाइनमैन।
- प्रज्ञानानंद, स्वामिनी (2010). *गार्गी से भारती तक: बौद्धिक परंपरा में नारी की भूमिका*/वाराणसी: शोध प्रकाशन।
- रमाबाई, पंडिता (1887). *द हाई-कास्ट हिंदू वुमन*/फिलाडेल्फिया: जे.बी. लिपिनकॉट कंपनी।
- रामचंद्रन, आर. (2015). *विमेन इन साइंस इन इंडिया*/नई दिल्ली: विज्ञान प्रसार।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (2023). *भारतीय ज्ञान प्रणाली: एक परिचय*/नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). *भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान संबंधी प्रावधान*/नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

